

गुरु आमार जाति

गुरु आमार गोत्र

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

मूल्य—एक रुपया

गुरु मोरो जीवन प्राण जड़ी

● क्या मैं अपने जीवन में “ब्रह्म” से साक्षात्कार कर सकता हूँ ?

- गुरु कोई व्यक्ति नहीं, कोई हाड़-मांस का पुतला नहीं, वह तो प्राणों का नर्तन है, हृदय की धड़कन और जीवन का श्वास है।
- पर जब तुम सामान्य मानव बन कर उसे देखते हो, तो वह तुम्हें सामान्य मनुष्य ही दिखाई देगा, पर जिस दिन तुम इस तुच्छता से ऊपर उठ जाओगे, जिस दिन हाड़-मांस, थूक-लार से निर्मित अपनी काया से ऊपर उठ कर देखने का प्रयत्न करोगे, तब तुम्हें गुरु का वास्तविक स्वरूप दिखाई देगा, तब तुम्हें गुरु की ऊंचाई का बोध होगा, तब तुम्हें गुरु में अन्तर्निहित परब्रह्म के साक्षात् दर्शन हो सकेंगे।
- क्योंकि वह कबीर के शब्दों में “गोविन्द” से भी बढ़ कर है, “गुरु गोविन्द दोऊ खड़े किसके लागू पाय”, और इसीलिए परमात्मा तक पहुँचने का रास्ता गुरु के पास से ही होकर गुजरता है, बिना गुरु के तुम गोविन्द को पा ही नहीं सकते, तुम “ईश्वर” को “ब्रह्म” को पहिचान ही नहीं सकते, क्योंकि वह तो गुरु के रूप में तुम्हारे सामने खड़ा है, जब तुम उसे ही नहीं पहिचान सकोगे, तो फिर ब्रह्म को कैसे पहिचान सकोगे, फिर तो तुम्हारी ब्रह्म तक की यात्रा भूठी है, व्यर्थ है, बेमानी है।
- गुरु तो हृदय में बहते हुए ब्रह्म की मद भरी धारा है, जिसमें स्नान करके पवित्र होना है, वह तो आनन्द का सरोवर है, जिसमें डूबने से तृप्ति है, आनन्द है, मस्ती है, वह तो जीवन का मूल है, प्राणों को चैतन्य करने की जड़ी है।
- इसीलिए तो साकार गुरु के चरणों में समर्पण ही पूर्णता को प्राप्त करना है, और यह समर्पण ही “ब्रह्म” से साक्षात्कार है, उसमें पूर्ण रूप से विसर्जन है।

दरस बिन दूखण लागे नैन

● जब से आपमें निहित ‘ब्रह्म’ की झलक देखी है, तब से ये आँखें पुनः उसी झलक को देखने के लिए बेताब हैं, व्याकुल हैं, कुछ उपाय बताइये न, गुरुदेव ! मैं क्या करूँ ?

- तुम आधे जग रहे हो, तो आधी बेहोशी में भी हो, तुम्हें पता ही नहीं है कि तुम किधर जा रहे हो, तुम्हारा लक्ष्य क्या है तुम किसे खोज रहे हो?
- पर तुम्हारी आँखों ने सद्गुरु के माध्यम से ईश्वर की एक झलक देख ली है, देख ली है और वह ज्योत्स्नित हो उठी है, चमक उठी है, आनन्द, उमंग और उछाह से भर उठी है।
- पर फिर तुम्हारे मन का सन्देह तुम्हारी आँखों के सामने आ गया है, फिर तुम्हारे मन का छल आँखों के सामने फन फैला कर सर्प की तरह खड़ा हो गया है, कि यह हाड़-मांस से निर्मित गुरु है भी या नहीं, और इस सन्देह ने तुम्हारी आँखों पर “गान्धारी” की तरह पट्टी बांध दी है।
- पर उसने तो एक बार उस झलक को देखा है, आँखों ने तो एक बार इस हाड़-मांस के शरीर के भीतर स्थित उस ज्योति को अनुभव किया है, उसने तो उस आनन्द की लपक में अपने सम्बन्धों को परखा है।
- और अब, जब उन आँखों के सामने सन्देह के बादल घिर आये हैं तो वह सद्गुरु की झलक भी बादलों की ओट में लुप्त हो गई है, और आँखें बेचैन हो गई हैं, उनमें मोती की तरह बड़ी-बड़ी बूँदें लुढ़कने लगी हैं, उस दृश्य को पुनः देखने के लिए तरस गयी हैं, उस घड़ी की बाट जोहते-जोहते दुखने लगी हैं, छटपटाने लगी हैं, व्याकुल, बेचैन और व्यथित होने लगी हैं।
- और बेताब हैं तुम्हारी ये आँखें, उन संदेह के सर्पिले फन को कुचलने के लिए, भ्रम के घटाटोप बादलों को हटाने के लिए, जिससे कि पुनः तुम्हारी आँखें अपने प्यार को, अपने ब्रह्म को, अपने गुरु को, जी भर कर देख सकें, आँखों के रास्ते से अपने हृदय में उतार सकें, और अपनी विरहण आँखों को सुख, तृप्ति और आनन्द का दुलार दे सकें।

रिमझिम-रिमझिम बुंदियां बरसत

- हर क्षण मेरी आंखों के सामने आपकी ही छवि बनी रहती है, सोचता हूं भाग जाऊं जंगलों में, और आपको पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिये तपस्या करूं, पर रास्ता नहीं सूझता आपको पाने का, कोई सरल सा रास्ता बताइये न !
- तुम दुखी हो परेशान हो और इस व्यथा से, इस परेशानी से इस दुःख से बचने के लिए पहाड़ों की ओर भाग रहे हो, गंगा में डुबकी लगाने की तैयारी कर रहे हो, जंगल में पशुओं की तरह भटकने के लिए दौड़ रहे हो ।
- पर यह गलत रास्ता है, जिस पगडंडी पर तुम बढ़ने की कोशिश कर रहे हो वह गलत है, यह पगडंडी तुम्हें अंधेरी खोह में उलझा देगी यह रास्ता तुम्हें बियावान जंगलों में भटकने के लिए एकाकी छोड़ देगा, और तुम तड़फ-तड़फ कर जान दे दोगे, पर प्राप्त कुछ नहीं कर पाओगे ।
- क्योंकि पहाड़ों की तरफ भागना, नदियों में मछलियों की तरह डुबकी लगाना व्यर्थ है, बेमानी है, अपने आपको छलना है, खुद को धोखा देना है, क्योंकि यह रास्ता ही तुमने गलत चुन लिया है ।
- क्योंकि जहां तुम शांति की खोज कर रहे हो वह छलावा है, धोखा है, एक सपना है, और जब यह सपना टूट जायगा, तो तुम खुद भी उसके साथ ही साथ टूट जाओगे, बिखर जाओगे, चकनाचूर हो जाओगे ।
- तुम्हें लंगोटी लगा कर जंगल की ओर नहीं भागना है, भगवे कपड़े पहिन कर मन पर सौ-सौ पर्दे नहीं डालने हैं, आंखें बंद कर ठूठ नहीं बन जाना है ।
- अपितु सही रास्ता तो यह है कि तुम मेरे पास आओ, मेरे स्नेह की वर्षा में अपने आपको भीगने दो, मेरे प्यार की फुहार में अपने आपको तरंगित होने दो, मेरा स्पर्श कर शरीर को पुलकित होने दो, तब तुम्हें आनन्द की अनुभूति होगी, तब तुम्हारे अन्दर प्रेम का अंकुर फूटेगा, तब तुम्हारा शरीर मेरी सुगंध से सुवासित हो सकेगा और तब तुम सही अर्थों में धन्य हो सकोगे, सही अर्थों में प्रेममय हो सकोगे, सही अर्थों में रसमय हो कर आनन्द से सराबोर हो सकोगे ।
- एक बार देख तो लो, प्रयत्न करके ही सही ।

जल बिच मोन पियासी

- मेरे जीवन में सब कुछ होते हुए भी मुझे खाली-खाली सा लग रहा है, जैसे कि मैं युगों-युगों की प्यासी हूं, बेचैन हूं, परेशान हूं क्या करूं मेरे गुरुदेव ! यह प्यास कैसे मिट सकती है ?
- कबीर ने सही कहा है कि अथाह समुद्र में भी मछली प्यास से बेचैन है, तृपित है, प्यासी है ।
- और तुम भी इस दुःख के सागर में, गृहस्थ की इन परेशानियों के समुद्र में, मछली की तरह प्यासी हो, क्योंकि तुम्हें पता ही नहीं है, कि मीठे पानी का स्रोत कहां है, जहां प्यास बुझाई जा सके, अमृत की मधुर धारा किस ओर बह रही है, जहां तुम्हारी प्यास बुझ सके ।
- और इसके लिए तुम्हें गुरु के पास आना होगा, क्योंकि इस अथाह दुःख के समुद्र में वही एक मधुर धारा है, जहां प्यास बुझाई जा सकती है, वही एक कलकल करता हुआ भरना है, जहां हृदय को तृप्त किया जा सकता है ।
- और यह तृप्ति तो तुम्हारे पास ही है, अमृत की फुहार तो तुम्हारे पास ही बरस रही है, और तुम उस खारे नमकीन संसार के समुद्र की ओर भाग रही हो, अमृत का भरना तो बिल्कुल तुम्हारे पास कलकल करता हुआ बह रहा है, और तुम अपने दुःख, परेशानियों और संताप से सराबोर गृहस्थ के समुद्र में हिचकौले खा रही हो, और वह बेस्वाद, नमकीन खारा पानी तुम्हारी आंखों में, मुंह में और पेट में उतर रहा है, तुम्हें ऊबकाई आ रही है, आंखें खारे पानी से जल रही हैं, और तुम वहीं हाथ पैर मार रही हो ।
- तुम मेरे पास आओ अपने गुरु के पास, अपने आत्मिय के पास, अपने स्वजन और जीवन की घड़कन के पास, ज्ञान के मीठे कलकल करते हुए भरने के पास, आनन्द की नृत्य करती हुई लहरों के पास ।
- और तुम वह सब कुछ पा लोगी, जिसकी तुम्हें चाह है, ध्यान-धारणा साधना-सिद्धि, सुख-सौभाग्य, आनन्द और मस्ती की भीनी-भीनी फुहार सौभाग्य का लहराता हुआ सागर, और आनन्द से सराबोर गुरु का हृदय, और इससे ज्यादा तुम्हें चाहिए भी क्या ?

करक कलेजे मांय

- गुरुवर ! आपके पास से जाने के बाद हर क्षण, हर पल आपकी याद सताती रहती है, हूक उठती रहती है हृदय में, ऐसा लगता है, कि जैसे कलेजे में कोई फांस चुभ गई हो इसके लिए क्या करूं, प्रभु ?
- यह तुम्हारे कलेजे की कसक नहीं है, यह तो एक चेतना है, जो तुम्हें उठने के लिए, बढ़ने के लिए और पूर्ण रूप से एकाकार हो जाने के लिये प्रेरित कर रही है ।
- यह फांस तुम्हारे कलेजे में कोई पहली बार नहीं फंसी है, इससे पहले भी कई बार यह फांस चुभी होगी, कई बार तुम्हारे कलेजे में दर्द उठा होगा, और तुमने सुना-अनसुना कर दिया होगा, कई बार तुम्हारे दिल में मिलने की हूक उठी होगी, और तुमने कस कर उसे दबा दी होगी ।
- और यह कोई फांस इस जीवन की ही नहीं है, कई-कई जन्मों की फांस है, जो तुम्हारे कलेजे में गड़ी है, जो तुम्हें आगाह कर रही है, कि कहीं और चलना है, जो तुम्हें सावधान कर रही हैं कि यहीं नहीं रुक जाना है, मंजिल कहीं और है जहां तक जाना है, क्योंकि वहां जाने पर ही यह कसक मिट सकेगी, यह दर्द खत्म हो सकेगा, यह कलेजे में गड़ी हुई फांस निकल सकेगी ।
- और मैं तो काफी समय से आवाज दे रहा हूं तुम्हें, निमंत्रण दे रहा हूं तुम्हें, स्वीकृति दे रहा हूं अपने पास आने की, आ कर मिलने की, मिल कर एकाकार हो जाने की, एकाकार हो कर समर्पण हो जाने की, और समर्पित हो कर अपने अस्तित्व को मिटा देने की ।
- मैं तो आवाज दे रहा हूं युगों-युगों से तुम्हें, मैं तो बुला रहा हूं जनम-जनम से तुम्हें, मैं तो निमंत्रण दे रहा हूं, दोनों भुजाएं फैलाकर तुम्हें सीने से लगाने के लिये, वक्षस्थल में भींच लेने के लिये, दिल में पूरी तरह से उतार देने के लिये ।
- तभी तो तुम्हारे कलेजे की यह "करक" निकल सकेगी, तभी तो इस फांस से तुम्हें मुक्ति मिल सकेगी, तभी तो तुम सद्गुरु को पा सकोगी जनम-जनम के लिये, युगों-युगों के लिये ।
- और तभी तुम पूर्ण बन सकोगी, आनंदित प्रफुल्लित, सुवासित ।

हे री ! मैं तो प्रेम दीवानी

- क्या प्रेम घटिया और तुच्छ है, क्या प्रेम करना ओछापन है, आखिर क्या है प्रेम ?
- तुम प्रेम-दीवानी हुई नहीं, होती तो फिर मुझे यह सब कहना ही नहीं पड़ता, यह कुछ भी नहीं बताना पड़ता ।
- क्योंकि सारे वेद, शास्त्र, उपनिषद, दर्शन और मीमांसा "प्रेम" पर ही तो आकर खत्म होते हैं, जिसने प्रेम ही जान लिया, उसके पास बाकी जानने के लिए रहा ही क्या है ?
- और तुमने अभी प्रेम करना सीखा ही कहाँ है, तुमने तो वासना को ही प्रेम समझ लिया है, हाड़-मांस को ही प्रेम की अभिव्यक्ति मान ली है ।
- प्रेम तो जीवन का सौन्दर्य है, सम्पूर्ण जीवन की जगमगाहट है, हृदय का नृत्य है, मन की प्रफुल्लित तरंगें और धरती की थरथराहट है ।
- और गुरु को ध्यान से या धारणा से नहीं पाया जा सकता, पालथी मार कर आंखें बन्द करके भी नहीं पाया जा सकता, आचमनो से जल उछाल कर, या शंख बजा कर भी उसे नहीं पाया जा सकता ।
- प्रेम में दीवानगी अभी आई नहीं तुममें, प्रेम राधा का देखो, जो बांसुरी की एक धुन पर बेतहासा दौड़ी चली जाती थी, हांकती हुई, बेसुध, अपने आप से बेखबर । प्रेम तो मछली का देखो, एक क्षण के लिए उसे समुद्र के जल से हटा कर तो देखो, तड़फ कर जान दे देगी, प्रेम कुरंगी का देखो, एक क्षण के लिए भी कुरंग आंखों से ओझल होता है तो कुरंगी पत्थर पर सिर पटक कर जान दे देती है ।
- अगर प्रेम में दीवानगी ही आ गई, तो फिर क्या दुनियां, क्या समाज, क्या लोग और क्या आलोचनाएं । दीवानगी तो प्रेम का प्रतिफल है, ईश्वर का श्रेष्ठतम वरदान है, और गुरु से ब्रह्म से ईश्वर से एकाकार हो जाने की सफल सहज क्रिया है ।
- और मैं कहता हूं, तुममें और दीवानगी आये, और त्वरा आये, और तुम इसी जीवन में ब्रह्म से एकाकार हो सको ।

रसो वै सः ब्रह्म

- आपने अपने प्रवचनों में कहा है, कि गुरु के माध्यम से ब्रह्म से साक्षात्कार किया जा सकता है, क्या सामाजिक वर्जनाओं के रहते नारी भी ऐसा सौभाग्य पा सकती है ?
- एक तो इस बात का ध्यान रखो कि साधना के पथ पर न तो कोई पुरुष होता है और न कोई स्त्री, वह एक सम्पूर्ण साधक होता है ।
- और फिर साधक की यात्रा शून्य से प्रारम्भ होकर 'ब्रह्म' तक पहुँचती है, क्योंकि उसका अन्तिम पड़ाव ब्रह्म है, ब्रह्म से साक्षात्कार है, ब्रह्म में विसर्जन है ।
- पर ब्रह्म को वेदों और शास्त्रों ने भी नहीं देखा, इस लिए गुरु के माध्यम से ही ब्रह्म तक की यात्रा सम्पन्न की जा सकती है, और जिसने गुरु को जान लिया, उसने ब्रह्म को जान लिया, जो गुरु से एकाकार हो गया, वह ब्रह्म से एकाकार हो गया, जो गुरु में विसर्जित हो गया, वह ब्रह्म में भी लीन हो गया ।
- और फिर तुमने शब्द छोड़ा है 'सामाजिक वर्जनाओं' का, तो समाज कब किसी को बढने देता है, कौओं का झुंड कब चाहेगा, कि उनमें से कोई हंस हो जाय, कीचड़ की गंदगी कब चाहेगी कि उसमें कोई कमल खिल जाय, गुलामी में सांस लेने वाले कब चाहेंगे कि कोई ताजी हवा की सुवास से सुगंधित, मस्त और आनन्दित हो जाय ।
- और फिर समाज ने तुम्हें दिया ही क्या है, कुंठा, परेशानी, बाधाएं, अड़चनें, कठिनाइयां और गुलामी ।
- और जो समाज से दबता है, उसे समाज और दबाता है, जो समाज से भयभीत होता है, समाज उस पर और अधिक जुल्म करता है, और अधिक घेरे में कसता है, और अधिक सिकंजे में जकड़ता है ।
- राधा ने कब समाज की परवाह की, वृषभानु ने उसे घर में कैद कर दिया तो क्या कृष्ण की बांसुरी सुनते ही यमुना किनारे दौड़ कर पहुँचने से रुकी, ललिता को दीवार में चुनने की तैयारी की, तो क्या वह कृष्ण से लिपटने से रुकी, मीरा को जहर का प्याला थमा दिया तो क्या उसने समाज की परवाह की, नदी के बहाव में बांध खड़े कर दिये, तो क्या उसे समुद्र से मिल जाने से कोई रोक सका ?
- यह तब होता है, जब हृदय में वेग होता है, तड़फ होती है, मिलने की चाह होती है, समाज से बगावत करके अपने आप को स्थापित करने की क्षमता होती है ।
- और तुम्हें भी ब्रह्म से साक्षात्कार तक की मंजिल पार करने से कोई नहीं रोक सकता, होनी चाहिए तुम्हारे पैरों में ताकत, आंखों में चिनगारी और हृदय में बगावत ।